

स्वदेशी आन्दोलन में गणेश महोत्सव का महत्व



स्वतंत्रता आन्दोलन में संगठनों का बहुत महत्व रहा है। इन संगठनों से अंग्रेज़ी सरकार भी डरा करती थी। इन्हीं संगठनों को शक्ति देने में योगदान रहा गणेश महोत्सव का। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रद्धेय भाई राजीव जी के श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

ऑडियो लिंक: https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4Q2R4SnUwc3VLaFk/edit?usp=sharing

19वीं शताब्दी में भारत के गाँवों में अंग्रेज़ों द्वारा बनाई गई पुलिस का बहुत आतंक था। हालात ये थे कि अगर कोई वर्दी धारी गाँव से गुजर जाता था तो लोग अपने घर का दरवाजा बंद कर लेते थे। उन दिनों भारत में एक बहुत बड़े विचारक थे जिनको लोग 'लोकमान्य' कहा करते थे। उनका नाम था 'बाल गंगाधर तिलक'। लोकमान्य जी पेशे से एक वकील थे और महाराष्ट्र में अंग्रेज़ों की कोर्ट में वकालत किया करते थे। कई वर्षों की वकालत के बाद उन्हें एहसास हुआ कि इस कानून की मदद से मेरे देशवासियों को कभी भी न्याय नहीं मिल सकता क्योंकि कानून बनानेवाले खुद ही अन्यायी हैं! इसके लिए उन्होंने वकालत छोड़ने का फैसला किया! फैसला बड़ा था और परिवार को प्रभावित करने वाला भी था, इसीलिए उनके इस फैसले का सबसे पहला विरोध किया उनकी पत्नी ने। लोकमान्य जी ने अपनी पत्नी को भी किसी तरह राज़ी कर लिया और चल पड़े भारत को विदेशी जुल्मों से मुक्त करने की दिशा में! सबसे बड़ा प्रश्न जो उनके सामने था वो यह कि भारत की जनता तो अंग्रेज़ों से दबी हुई है और कुछ भी करने का साहस उसमें अब बचा नहीं है तो ऐसा क्या किया जाए जिससे सब एकजुट हो कर विदेशी शासन के विरुद्ध अपना मोर्चा खोलें?

चूँकि लोकमान्य जी एक विचारक थे, उन्होंने बहुत जल्दी पता लगा लिया कि भारत की शक्ति उसकी आध्यात्मिकता में बसती है। इसके लिए उन्होंने एक योजना बनाई और वो यह थी कि अब हर गाँव में एक मंडली तैयार हो जो एकसाथ मिलकर गणेश चतुर्थी का आयोजन करे! इससे लोग एकजुट होंगे और एकमत होंगे जिससे उनकी शक्ति बढ़ेगी। यह एक धार्मिक अनुष्ठान भी था तो

लोगों को इस आयोजन के लिए प्रेरित करना भी सरल था क्योंकि भारत के लोग (अब केवल गाँवों में) शुरू से ही धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। यह बात है सन 1893 की, जिन दिनों अंग्रेज़ों ने Indian Police Act की धारा 144 लागू की हुई थी जिसके तहत किसी भी जगह 4-5 लोग इकट्ठे नहीं हो सकते थे। लोकमान्य जी ने गांव गांव घूमना शुरू किया और लोगों को यह कहना शुरू किया कि गणपति विघ्नहर्ता हैं, इनकी पूजा हमें एकसाथ मिलकर करनी चाहिए ताकि अंग्रेज़ रूपी यह विघ्न हमारे देश से खत्म हो। वे एक ओजस्वी वक्ता थे जिनकी प्रेरणा से महाराष्ट्र के गाँवों में गणेश पूजा के लिए मंडलियां स्थापित होनी शुरू हो गईं। पुलिस को जब पता चला तो उन्होंने झूठे आरोपों में लोगों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया ताकि लोग इस अनुष्ठान में भाग न लें, किन्तु फिर भी कोई डरा नहीं! आलम यह था कि जिन अंग्रेज़ों से लोग इतना डरते थे, 1897 तक आते आते महाराष्ट्र के सभी गाँवों में मंडलियां तैयार हो चुकी थीं! सन 1900 तक सम्पूर्ण महाराष्ट्र में अब गणेश चतुर्थी सबसे बड़ा त्यौहार बन चुका था जिसमें समाज का प्रत्येक वर्ग बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया करता था। लोगों की ऐसी एकता देख कर अंग्रेज़ों की नींद उड़ गई थी!

गणेश महोत्सव के पीछे जो मूल भावना थी वो थी स्वदेशी की! लोकमान्य जी जिस किसी भी गणपति मंडली में जाते तो एक ही बात कहते थे कि यह केवल एक महोत्सव मात्र नहीं है बल्कि हमें इस बात पर भी ध्यान देना है कि अंग्रेज़ों की सप्लाई कहाँ से है। सप्लाई थी व्यापार, जिसके जरिए विदेशी सामानों से होने वाले मुनाफे का उपयोग वे भारत को दबाने के लिए करते थे। उस समय नमक, चीनी, वस्त्र आदि सब इंग्लैंड से बनकर भारत आता था। जब लोकमान्य जी ने स्वदेशी का नारा दिया तो लोगों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना आरम्भ कर दिया! चीनी की जगह गुड़ इस्तेमाल होने लगा, विदेशी वस्त्रों की

सामूहिक होली जलने लगी, नमक खुद का बना कर लोग खाने लगे और Wilkinson जैसी अंग्रेज़ी ब्लेड की जगह उस्तरे से हजामत शुरू हुई (उस ज़माने के उस्तरे में ब्लेड नहीं लगती थी)! यही स्वदेशी आन्दोलन लाला लाजपत राय और विपिन चन्द्र पाल ने क्रमशः उत्तर और पूर्व भारत में शुरू कर दिया! उन दिनों महात्मा गाँधी राजनीति में सक्रिय नहीं थे। इस आन्दोलन का दबाव इतना ज्यादा था कि अंग्रेज़ी कंपनियों को लाखों का नुकसान होने लगा! इसी दबाव में आकर उन्हें सन 1911 में बंगाल का विभाजन रद्द करना पड़ा जो अंग्रेज़ों की, गुलाम भारत के इतिहास में सबसे पहली हार थी! यह पराजय उन्हें जनता के रोष से झेलनी पड़ी थी जो स्वदेशी की भावना से जन्मी थी!

स्वदेशी आन्दोलन में लोकमान्य जी ने विद्यार्थियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया। हजारों युवाओं ने इसमें भाग लिया। जो दुकानदार विदेशी सामान बेचते थे उन्हें ये युवा समझाते थे कि वे विदेशी सामान न बेचा करें। जो दुकानदार नहीं मानते थे, ये क्रांतिकारी उनकी दुकान के बाहर बैठ जाते थे और ग्राहकों को समझाते थे कि वे लोग विदेशी माल न खरीदें। जो लोग विदेशी सामान खरीद कर ले भी आते थे, ये क्रांतिकारी उन्हें उतने पैसे देकर उन्हीं के सामने उस सामान की होली जला देते थे! कई जगहों पर तो ये युवक दुकान के आगे लेट जाते थे और ग्राहकों को कहते थे कि विदेशी सामान जब खरीद ही लिया है तो उनके शरीरों के ऊपर पैर रख कर निकलना पड़ेगा! यह जूनून देख कर लोगों ने विदेशी सामान खरीदना बिल्कुल ही बंद कर दिया। इसी जज्बे ने बंगाल का विभाजन रोका था! इस सफलता के बाद लोकमान्य जी को भी स्वदेशी की भावना की असली शक्ति दिखाई दी और उन्होंने लोगों से कहा कि अगर यह आन्दोलन एक कानून तुड़वा सकता है तो यह भारत को स्वतंत्र भी करा सकता है! इसके बाद उन्होंने इसी आन्दोलन को अस्त्र बना कर पूर्ण स्वराज्य की मांग की!

अपने अंतिम दिनों में लोकमान्य जी ने स्वदेशी आन्दोलन की कमान महात्मा गाँधी के हाथों में सौंपी जिसको उन्होंने आगे बढ़ाया। महात्मा गाँधी जी ने इसमें एक और बात जोड़ी। उन्होंने कहा कि यह बिल्कुल सही है कि हम विदेशी कपड़ा नहीं पहनेंगे लेकिन हम अपना कपड़ा भी खुद ही तैयार करेंगे! इससे पहले भारत में मोटे कपड़े जैसे चादर, चटाई आदि तो स्वदेशी बनने लगी थी किन्तु पहनने का कपड़ा अभी भी बाहर से ही आ रहा था। उन्होंने हर गाँव वासी को चरखा दिया और कहा कि अब इस क्षेत्र में भी हमें आत्मनिर्भर बनना है। इसी आन्दोलन का नतीजा है आज का हमारा 'खादी ग्रामोद्योग' जो इतनी विदेशी प्रतिस्पर्धा के बावजूद भी 15 लाख ग्रामीण वासियों को रोज़गार देने में सक्षम है! सोचिए, यदि हम में से हर एक भारतीय खादी का कपड़ा पहने तो क्या कोई बेरोजगार रहेगा? मजे की बात तो यह है कि खादी के अधिकतर खरीददार विदेशी लोग होते हैं जिनके यहाँ के कपड़े हम बड़े शौक से पहनते हैं! आप पेंट, शर्ट, कुर्ता, धोती, सूट कुछ भी खरीदें; यदि आपके पास खादी का विकल्प है तो उसे ही चुनें क्योंकि एक अच्छी क्वालिटी के कपड़े के साथ-साथ आप अपने देश को भी लुटने से बचा रहे हैं!

यदि आज के दौर की हम बात करें तो लगभग 100 फीसदी लोगों को यही नहीं मालूम होगा कि गणपति महोत्सव किस भावना के साथ मनाया जाना चाहिए! आज के इस माहौल में गणेश महोत्सव में सिर्फ़ पैसे का रंग दिखाई पड़ता है। अश्लील फ़िल्मी गाने, मौज मस्ती और विदेशी शोर शराबे के साथ जिस गणेश महोत्सव को आज के भारत में मनाया जाता है, निस्संदेह उससे लोकमान्य श्री बालगंगाधर तिलक जी और उनके सहयोगी क्रांतिकारियों की आत्मा क्लेशित होती होगी! इस महोत्सव में मूल भावना थी एकता की, पवित्रता की, राष्ट्र के

प्रति समर्पण की, श्रद्धा की और सबसे ऊपर स्वदेशी की जिसकी जगह ले ली है आज निकम्मेपन, हुल्लड़ बाजी, मस्ती और दिखावट ने! यही वो क्षेत्र हैं जहाँ केवल त्यौहार भारतीय रह गए हैं लेकिन त्यौहार मनाने वाले भारतीय नहीं रह गए हैं। इन त्योहारों के पीछे जो मूल भावना है, वह पूर्णतया मिटती जा रही है जो हमारी आने वाली पीढ़ी की सुरक्षा के विषय में प्रश्न चिन्ह लगाती है! लेकिन इसका जिम्मेदार है कौन?

आज की तारीख में स्वदेशी तो दूर की बात रही, हम अपनी निजी जीवन में गुलामी को ढोते हैं। इसके दो सबसे बड़े उदाहरण हैं - पहला चाय का नशा और दूसरा दांत साफ़ करने के लिए टूथपेस्ट। भारत के प्रत्येक घर में दूध पीने वाला चाहे कोई न मिले परंतु चाय पीने वाला जरूर मिलेगा! चाय में Theanine नाम का एक नशीला पदार्थ होता है जो चाय की लत पैदा करता है। ये बात आप भी जानते होंगे कि जो व्यक्ति अपनी आबो हवा के साथ ताल मेल बिठा लेता है, वही चिरकाल तक स्वस्थ रह सकता है। चाय एक गर्म पदार्थ होता है जो शरीर में रक्त प्रवाह को तेज करता है तथा गर्मी पैदा करता है। भारत जैसे गर्म देश में इसका सेवन अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है! क्या आप जानते हैं, 1890 से पहले भारत में कोई भी चाय नहीं पीता था क्योंकि इसकी आवश्यकता नहीं थी? अंग्रेज़ों ने आकर यहाँ चाय की खेती शुरू करवाई और चाय की पत्ती से बचने वाली धूल को यहाँ पैकेट और डिब्बों में बेचना शुरू किया जिसे Tea Dust कहते हैं और आप बड़े शौक से उसे ताज, लिप्टन के नाम से खरीदते और पीते हैं! यह पत्ती का अवशेष acidity और high BP का सबसे अहम कारण है क्योंकि हम भारतीय अपनी गरम आबो हवा के कारण इसे हजम नहीं कर सकते!

ठंडे इलाकों की अपेक्षा गरम इलाकों में रहने वाले लोगों के मसूड़े नर्म होते हैं। इन नर्म मसूड़ों पर हम बड़ी बेरहमी से प्लास्टिक का ब्रश रगड़ते हैं और इन्हें पहले की अपेक्षा और भी अधिक कमज़ोर बना लेते हैं! मजे की बात तो यह है कि हमारा ध्यान इस बात पर जाने के बजाय डेंटिस्ट के पास जाता है, जब मसूड़ों से खून आना शुरू हो जाता है। पहले मसूड़े और उनके बाद दांत कमज़ोर होने शुरू हो जाते हैं। हम इतने मजबूर हैं कि अपनी आदत भी नहीं बदल सकते क्योंकि हमने यह आदत अपने माता पिता से ही सीखी है जिसकी परंपरा हमारे देश में पिछले सौ सालों से चली आ रही है! हम भारतीयों को पारंपरिक भारतीय पद्धति का दातुन और मंजन नहीं पसंद क्योंकि इनकी टीवी में एड नहीं आती! दांत साफ़ करने का सबसे अच्छा विकल्प है नीम का दातुन जिसको चबाने से उसके रेशे निकाल आते हैं जो इतने मुलायम होते हैं कि आपके मसूड़े उससे स्वस्थ बनते हैं। दूसरा फायदा यह है कि नीम 300 तरह के कीटाणुओं का सफाया करता है जिससे आपके दांतों में सडन नहीं पैदा होती। जो लोग दातुन नहीं कर सकते, वे लोग उंगली से मंजन कर सकते हैं। तर्जनी (अंगूठे के साथ वाली उंगली) में ऐसे कई बिंदु होते हैं जिनका संबंध आपके पेट से होता है। उंगली से मंजन करने पर आँतों की स्वतः मालिश हो जाती है!

यह बात हम सभी की समझ में बैठनी चाहिए कि किसी भी देश की परतंत्रता उस देश की आर्थिक परतंत्रता से शुरू होती है! पहले उस देश की अर्थव्यवस्था को गुलाम बनाया जाता है और उसके बाद उस देश की राजनीति को सिर झुकाना ही पड़ता है! इसीलिए यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश गुलाम न बने तो उसके लिए सबसे पहले हमें आर्थिक आज़ादी हासिल करनी होगी। आर्थिक आज़ादी हासिल करने के लिए हमें अपने पैरों पर खड़ा होना होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो विदेशी वस्तुओं का पूरी तरह से बहिष्कार करना होगा! विदेशी कंपनियाँ इसीलिए सफल हो रही हैं क्योंकि वे भारतीयों की जरूरतों को

जबरदस्ती बढ़ाने में कामयाब रही हैं! उदाहरण के तौर पर, आजकल मोबाइल फोन का चलन जोरों पर है और खासकर युवावर्ग उससे प्रेरित हैं। दुनिया की सभी मोबाइल बनाने वाली कंपनियाँ ये जानती हैं कि पूरे संसार में भारत सबसे बड़ा बाज़ार है मोबाइल का क्योंकि यहाँ सबसे बड़ा युवावर्ग है। इसके लिए उन्होंने अब कुछ स्मार्टफोन बनाने और भारत में बेचने शुरू किए हैं जिनके लिए हर तरह का विज्ञापन टीवी पर दिखाया जा रहा है। इन्हें देखकर युवाओं को ऐसा लगता है कि अगर ये फोन मेरे पास नहीं है तो मैं पिछड़ जाऊँगा या छोकरी नहीं पटेगी! 99% से अधिक युवा इन फोन का पूरा उपयोग करना न तो जानते हैं और न ही उनको आवश्यकता है। एक मोबाइल की जितनी आवश्यकता होती है उतना या उससे अच्छा काम करने वाला मोबाइल आजकल स्वदेशी कंपनियाँ भी बनाती हैं जैसे - Micromax, Lava आदि लेकिन फिर भी बड़े फोन या ब्रांड के चक्कर में आज बाज़ार में मोबाइल, विदेशी कंपनियों के लिए पैसा खींचने का सबसे अच्छा जरिया बन गया है क्योंकि भारतीयों का सारा ध्यान इस समय इसी यंत्र पर टिका हुआ है! जिस चीज़ का काम दो हजार रूपए में हो सकता है बिना देश को बेचे, उसी काम को करने के लिए हम बीस हजार से पचास हजार तक खर्च देते हैं! इसे आप क्या कहेंगे, बुद्धिमानी या बुद्धिहीनता?

दैनिक व्यवहार में आने वाले कुछ स्वदेशी प्रयोग जिन्हें अपनाकर आप न केवल अपने प्रयोजन को बेहतर ढंग से पूरा कर सकते हैं, उससे कहीं बढ़कर स्वदेशी व्रत का पालन करते हुए अपने देश के धन को बाहर जाने से रोक सकते हैं (इसे अपनाने से कोई कानून भी आपको नहीं रोक सकता):

नहाना

- चने की दाल का आटा या मसूर की दाल के आटे में कच्चा दूध मिलाकर उसके लेप से नहाएं।
- मुल्तानी मिट्टी को पानी में आधा घंटा भिगोकर रखें। साबुन की जगह इस लेप का उपयोग करें।
- कच्चे दूध में एक आधा नीम्बू निचोड़ लें। कपास (Cotton) के एक कपड़े को इसमें भिगोएँ और उससे अपने शरीर की मालिश करें। शरीर की सारी मैल कपड़े में उतर जाएगी।

Lux, Palmolive, Lifebuoy, Dettol, Camay, Johnson&Johnson, Dove, Pears आदि साबुनों का प्रयोग न करें! इन साबुनों में Caustic Soda या Sodium Hydroxide होता है जिसकी वजह से आपकी त्वचा का प्राकृतिक तेल नष्ट होता है। इस तेल के नष्ट होने से त्वचा रूखी हो जाती है और कई तरह के संक्रमणों (infection) को न्यौता देती है। यह प्राकृतिक तेल नष्ट करने के लिए नहीं बल्कि संरक्षित रखने के लिए होता है। यदि क्या आपको पता है Lifebuoy को यूरोप में Carbolic Soap भी कहते हैं जिससे वहाँ कुत्तों और घोड़ों को नहलाया जाता है? अगर आपको साबुन से ही नहाना है तो हमाम, Medimix, चन्द्रिका, Margo या पतंजलि के प्राकृतिक साबुनों का ही उपयोग करें।

शेविंग

शेविंग के लिए नारियल के तेल और अलोवेरा के जेल से उत्तम कुछ भी नहीं! आधा चम्मच नारियल के तेल से पहले दाढ़ी और मूँछों की मालिश कर लें। उसके बाद 5 ग्राम (6-7 बूँदें) एलोवेरा के gel से मालिश कर लें। इसके बाद ब्लेड से शेविंग करें। इतनी मुलायम शेव कभी जीवन में आपने नहीं की होगी! ऐसा लगेगा जैसे गाल पर दाढ़ी चिपकाई हुई थी और अब अपने आप उतर रही

है! इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसमें एक बार की शेविंग का खर्च कुछ 50 पैसे ही आता है तथा आपकी ब्लेड भी अधिक चलती है। इसकी गुणवत्ता सबसे उत्तम है। आज से शेविंग क्रीम और लोशन खरीदना बंद करें तथा स्वदेशी पद्धति अपनाएँ!

देश की सुरक्षा कई मामलों को लेकर खतरे में है। जिनमें खदानों की लूट से लेकर विदेशी कंपनियों के बढ़ते दबदबे से साफ़ समझा जा सकता है। इन सबसे ऊपर, आए दिन हमारे देश पर आतंकवादी हमले का साया मंडराता रहता है! सरकार की जो नीतियाँ इन सबकी जिम्मेदार हैं, वह सरकार तो कुछ नहीं करेगी परंतु हम ही को जागरूक होना पड़ेगा। गणेश महोत्सव उसी एकता और संकल्प शक्ति की हमें याद दिलाता है जिसके बल पर हमने आज़ादी हासिल की! इस बार भी हम ही विजयी होंगे बस जरूरत है तो थोड़ी सी हिम्मत की! हिम्मत अपनी सोच को बदलने की! अंग्रेजियत को छोड़कर वापिस भारतीय बनने की! अपने स्वाभिमान को जगाने की!

इन्कलाब जिंदाबाद!

जय हिंद!